TOPIC-2
अभिवृत्ति (Attitude)

ETHICS GS (PAPER-IV)

अभिवृत्ति: सारांश (कंटेन्ट), संरचना, वृत्ति; विचार तथा आचरण के परिप्रेक्ष्य में इसका प्रभाव एवं संबंध; नैतिक और राजनीतिक अभिरूचि; सामाजिक प्रभाव और धारण।

Attitude: content, structure, function; its influence and relation with thought and behaviour; moral and political attitudes; social influence and persuasion.

- आप एक और एक ही व्यक्ति हैं, कई क्षेत्रों में खेल रहे हैं, यदि आप अपने मूल अभिवृत्ति/दृष्टिकोण को ठीक (tune) करते हैं तो आप सभी क्षेत्रों में सुधार करते हैं। *(You are one and the same person, playing in many fields, if you tune your basic attitude you improve in all fields.)*
- अभिवृत्ति आदत को बनाती है, आदत चरित्र को बनाती है और चरित्र आदमी को बनाता है। *(Attitude makes habit, habit makes character and character makes a man.)*
- आपकी अभिवृत्ति आपकी ऊँचाई निर्धारित करता है। *(Your attitude determines your altitude)*

अभिवृत्ति (रवैया, नजरिया, मानसिकता, प्रवृत्ति या मनोवृत्ति): (Attitude)

जीवन के विभिन्न क्षेत्रों यथा- सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, प्रशासनिक आदि में व्यक्ति के व्यवहार के निर्धारण में मनोवृत्ति की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। व्यक्ति के अधिकांश व्यवहार अभिवृत्तियों के द्वारा प्रभावित एवं नियंत्रित होते हैं।

क्या है?

किसी वस्तु, व्यक्ति या व्यक्ति-समूह, घटना, स्थिति, मुद्दे, समाज या देश के प्रति व्यक्ति की धारणा, विचार, विश्वास (**संज्ञानात्मक घटक**), सुख-दु:ख का भाव, पसंद-नापसंद का भाव (**भावनात्मक घटक**) तथा अभिवृत्ति विषय के प्रति कार्य करने की तत्परता, अनुकूल या प्रतिकूल व्यवहार (**व्यवहारात्मक घटक**) के समुच्चय या संगठित तंत्र *(Organised system)* को अभिवृत्ति कहते हैं। जैसे लोगों में परमाणु ऊर्जा, शरणार्थी-समस्या, पाश्चात्य संस्कृति, को-एजुकेशन, पर्यावरण, स्वच्छता अभियान आदि के बारे में विशेष प्रकार की अभिवृत्ति दिखाई देती है।

अभिवृत्ति विभिन्न रूपों में मानवीय व्यवहार, जीवन-शैली एवं उसके व्यक्तित्व निर्माण को प्रभावित करती है, दिशा प्रदान करती है। यही कारण है कि लोगों के व्यवहार के परिमार्जन हेतु यह माना जाता है कि नैतिक एवं संवैधानिक मूल्यों के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास उसके अंदर हो।

सिविल सेवा के लिये आवश्यक है कि प्रशासनिक अधिकारी की अभिवृत्ति प्रशासनिक मूल्यों, नवाचार, कर्त्तव्य एवं अधिकार के प्रति सकारात्मक हो, तभी वह अपने कार्यों को कुशलतापूर्वक एवं प्रभावी रूप से संपन्न कर सकता है तथा सुशासन की संकल्पना को साकारित करने में सहायक हो सकता है।

विशेषताएँ:

- ***मनोवृत्ति का संबंध सदैव किसी व्यक्ति, विषय (Issues), घटना (Events) या विचार (Thoughts) आदि से होता है।*** अभिवृत्ति जिस विषय के प्रति होती है उसे 'अभिवृत्ति विषय' कहा जाता है। इस रूप में अभिवृत्ति की उत्पत्ति होने के लिए कोई न कोई विषय, घटना या विचार का होना आवश्यक है। जैसे व्यक्ति समलैंगिकता, बाल विवाह, अंतर्जातीय विवाह, नाभिकीय ऊर्जा, भारत-अमेरिका संबंध, भारत-पाकिस्तान संबंध आदि के बारे में एक अनुकूल या प्रतिकूल मनोवृत्ति विकसित कर सकता है। सामान्यत: विवादास्पद विषय पर व्यक्ति शीघ्र ही अनुकूल या प्रतिकूल मनोवृत्ति विकसित कर लेता है।
- अभिवृत्ति *जन्मजात (Innate) न होकर* ***अर्जित (Acquired)*** होती है। यह वातावरण के साथ हमारी अन्त:क्रिया *(Interaction)* के फलस्वरूप अर्जित होती है या ***सीखी (Learnt)*** जाती है। उम्र, अनुभव, संगति, घटना एवं परिस्थितियों के साथ-साथ धीरे-धीरे अभिवृत्तियों का विकास होता है। जन्म के समय व्यक्ति में किसी विषय के बारे में कोई विशेष अभिवृत्ति विद्यमान नहीं होती।

- अभिवृत्ति के अर्जित *(Acquired)* होने के कारण इस पर अच्छे और बुरे ***वातावरण का अच्छा या बुरा प्रभाव*** पड़ता है।
- अभिवृत्ति 'चाहना' (पसंद), 'नहीं चाहना' (नापसंद), स्वीकृति, विरोध आदि के रूप में अभिव्यक्त होता है।
- अभिवृत्ति की गहनता पसंद एवं नापसंद की मात्रा से संबंधित होती है। इस प्रकार विभिन्न मनोवृत्तियों में ***तीव्रता का अंतर*** होता है।
- अभिवृत्ति ***सकारात्मक (Positive) या नकारात्मक (Negative)***, अनुकूल *(Favourable)* या प्रतिकूल *(Unfavourable)* दोनों ही प्रकार की हो सकती है। इस रूप में यह *विशेष ढंग से व्यवहार करने हेतु निर्देशित* करती है। सामान्यत: अगर किसी की किसी वस्तु के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति है तो वह उसे पसंद करेगा, उसके प्रति आकर्षित होगा, उसे पाने का प्रयास करेगा। अगर नकरात्मक अभिवृत्ति तो वह उसे नापसंद करेगा, उससे दूर हटने का प्रयास करेगा। अगर किसी व्यक्ति की लोकतंत्र के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति है तो वह लोकतांत्रिक संस्थाओं एवं परंपराओं के प्रति अनुकूल दृष्टिकोण रखेगा, उन्हें पसंद करेगा एवं उसके अनुसार आचरण करेगा तथा तानाशाही प्रक्रियाओं के प्रति प्रतिकूल रवैया अपनाएगा।

जैसे- जब व्यक्ति की मनोवृत्ति स्वच्छता अभियान के प्रति अनुकूल हो तो वह सार्वजनिक स्थलों पर कभी भी गंदगी फैलाने या कूड़ा फेकने से बचेगा और साथ ही अगर कोई इसके विपरीत व्यवाहर कर रहा है तो उसे समझाएगा, उसका विरोध करेगा।

- अभिवृत्ति मानव व्यवहार को प्रभावित करने के साथ-साथ उसे ***दिशा भी प्रदान करती है।*** किसी मनुष्य, वस्तु, विचार, मुद्दे के संबंध में पक्ष-विपक्ष, घृणा-प्रेम आदि का मूल कारण हमारी अभिवृत्तियाँ ही है।
- अभिवृत्ति का रूप वैयक्तिक विभिन्नताओं के कारण सभी में अलग-अलग होता है। व्यक्ति की शारीरिक स्थिति, बौद्धिक स्थिति, संवेगात्मक परिपक्वता, सामाजिक वातावरण, परिस्थिति, लक्ष्य आदि अभिवृत्ति निर्माण, उनके विकास एवं उनमें नवीन परिवर्तन को प्रभावित करते हैं।
- अभिवृत्ति ***अपेक्षाकृत स्थायी*** या दीर्घकालिक होती है। परन्तु जब व्यक्ति अपना पर्यावरण और समाज छोड़कर दूसरे समाज और पर्यावरण में जाता है तो तद्नुरूप नये समाज एवं पर्यावरण के अनुरूप उसकी अभिवृत्तियों में भी परिवर्तन होता है। परिस्थितियों में परिवर्तन या कुछ नये कारकों *(Factors)* के उत्पन्न होने पर भी मनोवृत्ति में परिवर्तन संभव है, जैसे- दुकानदार-छात्र संबंध।
- मनोवृत्ति में ***प्रेरणात्मक क्रियात्मक गुण (Motivational Affective Properties)*** भी होते हैं। अभिवृत्तियाँ व्यक्ति को किसी विशेष व्यक्ति, घटना या परिस्थिति के संबंध में एक विशेष प्रकार की क्रिया करने के लिए प्रेरित कर सकती है। जैसे प्रशासक अपनी मनोवृत्ति से प्रेरित होकर कुछ खास प्रकार का व्यवहार अधिक तत्परता से करता है। उदाहरणस्वरूप संवैधानिक मूल्यों, कर्तव्य बोध एवं सेवा भाव होने पर अधिकारी अपने कार्यों को अधिक प्रभावी एवं सौहार्द्रपूर्ण ढंग से संपादित करता है तथा उनका उल्लंघन करने वालों के प्रति तद्नुरूप सख्त कार्यवाही भी करता है।
- अभिवृत्ति व्यक्ति में आशावादी या निराशवादी प्रवृति को जन्म देती है। परिणामस्वरूप हम आसपास होने वाली घटनाओं एवं समस्याओं के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक सोच विकसित कर लेते हैं।
- कभी-कभी अभिवृत्तियों में द्वैधवृत्ति *(Ambivalance)* भी पायी जाती है। ऐसी परिस्थिति में व्यक्ति किसी वस्तु के प्रति अनुकूल और प्रतिकूल दोनों प्रकार की भावनाओं को प्रदर्शित करता है, जैसे- बारिश अच्छी है, परंतु भिंगना नहीं है।
- अभिवृत्ति संदर्भ युक्त *(Referential)* होती है। एक ही व्यक्ति की अभिवृत्ति भिन्न-भिन्न समस्याओं के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक हो सकती है। नकारात्मक अभिवृत्ति होने पर पक्षपात, भेदभाव, पूर्वाग्रह जैसी प्रवृतियां उत्पन्न होती है।

अभिवृत्ति के घटक (Components) या अभिवृत्ति की संरचना (Structure)

अभिवृत्ति के घटक/संघटक का तात्पर्य उन तत्वों से है जिनसे अभिवृत्ति संरचित होती है। दूसरे शब्दों में अभिवृत्ति की संरचनात्मक इकाई को अभिवृत्ति का संघटक कहा जाता है। अभिवृत्ति की संरचना (structure) को तीन घटकों के रूप में वर्णित किया जा सकता है। ये तीन घटक हैं-

1. **संज्ञानात्मक संघटक *(Congnative Factor)*:** विचारपरक, सूचनात्मक या बोधात्मक घटक को संज्ञानात्मक संघटक (जानकारी या ज्ञान) कहा जाता है। संज्ञानात्मक घटक व्यक्ति के मस्तिष्क में निर्मित एक मानसिक प्रतिमा है जिसके अंतर्गत विषय या उद्दीपक (Stimulus) से संबंधित व्यक्ति के विश्वास, चिंतन, धारणा, जानकारी सन्निहित होते हैं। चूंकि इसमें सूचनाओं का मूल्यांकन होता है इसीलिए यह तत्व किसी वस्तुस्थिति या व्यक्ति के संबंध में पक्ष या विपक्ष में निर्णय-निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विचार-प्रक्रिया *(Thought process)* के निर्माण का महत्वपूर्ण आधार भी यही है।

2. **भावात्मक संघटक/संवेगात्मक संघटक *(Affective Factor)*:** इसके अंतर्गत किसी विचार, घटना, व्यक्ति, स्थिति या मुद्दे *(Issue)* आदि के संबंध में चर्चा होने, उन पर ध्यान जाने, उनसे संपर्क होने या उनका अनुभव होने पर उनके प्रति मन में उत्पन्न ***पसन्द या नापसन्द का भाव*** सन्निहित होता है। उदाहरणस्वरूप- जैसे- वृक्षों को सूखता या कटता देखकर दु:ख का भाव उत्पन्न होना।

   भावात्मक संघटक एक ऐसा संवेगात्मक भार है जो मनोवृत्ति को उत्तेजित एवं प्रेरित करता है। यद्यपि मनोवृत्ति विषय के मूल्यांकन हेतु कुछ ज्ञान आवश्यक है परंतु मूल्यांकन में प्रमुख भूमिका भावात्मक संघटक की होती है। जब हम किसी व्यक्ति, कार्य, व्यवसाय या विचारधारा आदि को पसंद करते हैं तो फिर हम उसके प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं और जब उसे नापसंद करते हैं तो फिर हम उसके प्रति नकारात्मक मनोवृत्ति अर्थात् प्रतिकूल मनोवृत्ति विकसित कर लेते हैं। ***मनोवृत्ति का भावात्मक तत्व ही मनोवृत्ति-मूल्यांकन को बौद्धिक मूल्यांकन से पृथक बनाता है।*** यही कारण है कि मनोवृत्ति विषय के प्रति विभिन्न लोगों के दृष्टिकोणों में अंतर होता है।

3. **क्रियात्मक घटक या व्यवहारपरक घटक:** क्रिया करने की प्रवृत्ति या तत्परता को व्यवहारपरक *(Behavioural)* घटक कहा जाता है। यह घटक मनुष्यों के व्यवहार या क्रिया को निर्देशित करता है।

प्रशासनिक संदर्भ में यदि अधिकारियों को अपने उत्तरदायित्व एवं कर्त्तव्य का ज्ञान हो तथा सिविल सेवा के प्रति समर्पण भाव हो तो फिर वे नि:संदेह जनता की समस्याओं को दूर करने हेतु प्रयासरत रहेंगे और ऐसा करके सुख की अनुभूति भी करेंगे।

अभिवृत्ति की संरचना

(ABC or CAB Model)

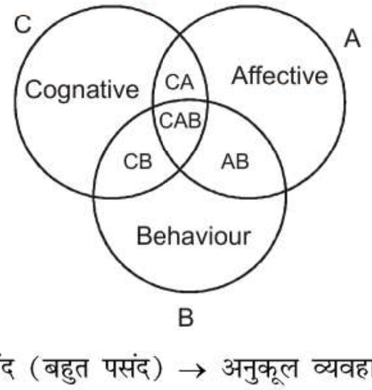

सकारात्मक सोच (वृक्षारोपण): → पसंद (बहुत पसंद) → अनुकूल व्यवहार (भाग लेना)

नकारात्मक सोच (परमाणु बिजलीघर): → नापसंद (बहुत नापसंद) → प्रतिकूल व्यवहार (विरोध में भाग लेना)

अभिवृत्ति की संरचना उपरोक्त तीन घटकों के आधार पर होती है। *इसे हम एक उदाहरण से देख सकते है:-* मान लीजिए हमारे पड़ोस में कुछ लोग ***'हरा-भरा पर्यावरण आन्दोलन'*** के एक अंग के रूप में वृक्षारोपण अभियान शुरू करते हैं। यहाँ इसके तीन पक्ष हैं-

1. ***भावनात्मक घटक:*** वृक्षारोपण अभियान को देखकर प्रसन्नता का अनुभव करना तथा वृक्षों को कटता देखकर दु:ख का अनुभव करना।
2. ***संज्ञानात्मक घटक:*** पर्यावरण के बारे में पर्याप्त ज्ञान रखना कि इसके संरक्षण, वृक्षारोपण आदि के क्या-क्या लाभ है?
3. ***व्यवहारपरक घटक:*** वृक्षारोपण अभियान में सक्रिय रूप से भाग लेना, अभिवृत्ति के व्यवहारात्मक पक्ष को प्रकट करता है।

अभिवृत्ति की चार प्रमुख विशेषताएँ है- विशेष संदर्भ

मनोवृत्ति के तीनों संघटकों के स्वरूप को सम्यक् रूपेण समझने के लिए इन घटकों से संबंधित विशेषताओं का विवेचन आवश्यक है। इन विशेषताओं के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि आखिर अभिवृत्ति कब और किस प्रकार से व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करती है।

अभिवृत्ति के संगठकों की विशेषताएँ
(Characteristics of the Components of Attitude)

कर्षण शक्ति/संयोजन क्षमता (Valence)	चरम-सीमा (Extremeness)	बहुविधता (Multiplexity)	केन्द्रिकता (Centrality)

1. **कर्षण शक्ति/संयोजन क्षमता (Valence) :** कर्षण शक्ति का तात्पर्य अभिवृत्ति-विषय के प्रति अभिवृत्ति की अनुकूलता *(Favourableness)* तथा प्रतिकूलता *(Unfavourableness)* की मात्रा से है। इस प्रकार किसी विषय के प्रति कोई अभिवृत्ति सकारात्मक है या नकारात्मक है, इसका ज्ञान (बोध) हमें कर्षण शक्ति द्वारा होता है। कर्षण शक्ति की यह विशेषता प्रत्येक संगठक के साथ पाई जाती है। उदाहरणस्वरूप-नाभिकीय ऊर्जा *(या S.E.Z. के संदर्भ में या खाद्य संरक्षण बिल के संबंध में या राजनीतिक पार्टियों को सूचना का अधिकार R.T.I. के दायरे में लाने के संदर्भ में, समलैंगिकता, लोकपाल बिल के संदर्भ में, दागी नेताओं को चुनाव में लड़ने से रोकना आदि)* के संदर्भ में विभिन्न व्यक्तियों की अभिवृत्तियों का मापन पाँच बिन्दुओं पर किया जा सकता है-

   (i) बहुत खराब मानना — (अतिवादिता)
   (ii) खराब मानना — ↑
   (iii) न खराब न अच्छा (तटस्थ) — मात्रा का अंतर (***Persuasion*** के द्वारा परिवर्तन संभव)
   (iv) अच्छा मानना — ↑
   (v) बहुत अच्छा — (अतिवादिता)

   - यदि कोई व्यक्ति *नाभिकीय ऊर्जा* के प्रति अपने दृष्टिकोण या मत का आंकलन 4 या 5 के मापन बिन्दु पर करता है तो स्पष्ट तौर पर उसकी अभिवृत्ति सकारात्मक है अर्थात् वह नाभिकीय ऊर्जा के विचार एवं विकल्प को पसन्द करता है।
   - यदि कोई व्यक्ति 1 या 2 को आकलित करता है तो उसकी अभिवृत्ति नकारात्मक है अर्थात् वह नाभिकीय ऊर्जा को नापसन्द करता है और इसे बढ़ावा देना गलत मानता है।
   - यदि कोई व्यक्ति बिन्दु 3 को चिह्नित करता है तो इसका आशय यह होगा कि नाभिकीय ऊर्जा के प्रति उसका दृष्टिकोण तटस्थ है अर्थात् न तो यह इसको पसंद करता है न ही नापसन्द। अत: तटस्थ अभिवृत्ति में कर्षण शक्ति न तो सकारात्मक होती है और न ही नकारात्मक।

2. **चरम-सीमा (Extremeness):** एक अभिवृत्ति की चरम सीमा यह इंगित करती है कि वह किस सीमा तक सकारात्मक या नकारात्मक है। उपरोक्त उदाहरण में आकलन मूल्य **"1"** और मापन मूल्य **"5"** दोनों परस्पर विपरीत दो चरम सीमा को बताते हैं। यह किसी वस्तु, घटना या व्यक्ति के प्रति पसन्द या नापसन्द की अतिवादिता को दर्शाता है।

3. **बहुविधता या अनेकत्व (Multiplexity):** बहुविधता अभिवृत्ति के संघटकों में विद्यमान तत्वों की संख्या को बताता है। जिस संगठन में जितने अधिक तत्व होंगे उसमें जटिलता अधिक होगी। जैसे सह-शिक्षा (Co-education) के प्रति व्यक्ति की मनोवृत्ति के संज्ञानात्मक घटक में कई तथ्य सम्मिलित होते हैं। जैसे इसकी शुरूआत किस स्तर पर की जाये, इसके क्या फायदे है, क्या घाटे है, शहर में अधिक लाभदायक है या गांव में। इसी प्रकार भावात्मक घटक के पक्ष के अंतर्गत विभिन्न संवेगों जैसे प्रेम, भक्ति, श्रद्धा, पसंद आदि का मिश्रण हो सकता है। स्वास्थ्य, विश्व शांति आदि से संबंधित विषयों के संदर्भ में व्यक्तियों में अनेक अभिवृत्तियाँ होती हैं।

4. **केन्द्रिकता (Centrality):** अभिवृत्ति की यह विशेषता अभिवृत्ति तंत्र में किसी विशिष्ट अभिवृत्ति की भूमिका एवं प्रधानता को इंगित करता है, जिस पर अन्य अभिवृत्तियाँ निर्भर करती है।

अधिक केन्द्रिकता वाली अभिवृत्ति गैर केंद्रीय या परिधीय अभिवृत्ति की तुलना में अभिवृत्ति तंत्र को अधिक प्रभावित करती है। जैसे- गुटका खाने या तम्बाकू चबाने से कई हानियाँ होती हैं, परन्तु इसमें केन्द्रीय भाव यह है कि इससे कैंसर की संभावना बढ़ जाती है।

मनोवत्ति एवं अन्य सम्बद्ध प्रत्यय (Attitude and Other Related Concept)

मनोवृत्ति एवं मूल्य दोनों अर्जित गुण (Acquired properties) है, सीखे जाते हैं। दोनों में हमारे व्यवहार को प्रेरित करने की क्षमता होती है।

क्र.सं.	मनोवृत्ति (Attitude)	मूल्य (Value)
1.	मनोवृत्ति सदैव किसी एक विषय, वस्तु या मनुष्य आदि के प्रति होती है।	मूल्य किसी विषय-विशेष से संबंधित न होकर उस वस्तु के संपूर्ण वर्ग (Whole class) से संबंधित होता है। इनका संबंध सामाजिक आदर्शों एवं उद्देश्यों से होता है। इसमें 'चाहिए' का तत्व निहित होता है। यही मूल्य अभिवृत्तियों के आधार होते हैं।
2.	किसी वस्तु, घटना या व्यक्ति आदि के पक्ष या विपक्ष में अभिवृत्ति निर्माण में मूल्य की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जैसे यदि कोई लोकतांत्रिक, मानववादी मूल्यों से युक्त हो तो फिर वह लोककल्याणकारी राज्य, समानता, स्वतंत्रता, न्याय, मानव गरिमा एवं महत्ता आदि के प्रति अनुकूल मनोवृत्ति तथा युद्ध, तानाशाही एवं शोषण आदि के प्रति प्रतिकूल मनोवृत्ति रखेगा।	मूल्य के कई प्रकार हैं- जैसे सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक मूल्य आदि।
3.	मनोवृत्ति के दो रूप है- सकारात्मक या नकारात्मक।	मनोवृत्ति की तुलना में मूल्य में भावात्मक पक्ष (Feeling component) अधिक प्रधान एवं प्रभावशाली होता है।
4.		मूल्यों में अभिवृत्ति की तुलना में स्थायित्व अधिक होता है।

मनोवृत्ति और विश्वास दोनों का संबंध व्यक्ति के आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक पक्षों, उनकी समस्याओं और समाधानों से होता है।

क्र.सं.	मनोवृत्ति (Attitude)	विश्वास (Belief)
1.	मनोवृत्ति में संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं व्यवहारात्मक संघटक के साथ प्रेरणात्मक गुण (Motivational Property) भी होते हैं। इस रूप में मनोवृत्ति का क्षेत्र विश्वास से अधिक बड़ा है।	विश्वास में संज्ञानात्मक संघटक प्रधान होता है, व्यवहारात्मक घटक गौण (Secondary) होता है, जबकि भावात्मक घटक अनुपस्थित होता है। प्रेरणात्मक गुण सदैव उपस्थित नहीं होते हैं। जैसे हमें विश्वास है कि सूर्य एक तरह का तारा ही है, परंतु उस विश्वास से हमें कोई विशिष्ट क्रिया करने की प्रेरणा नहीं मिलती।
2.	प्रत्येक मनोवृत्ति में विश्वास सम्मिलित होता है। विश्वास अभिवृत्ति के संज्ञानात्मक घटक को इंगित करता है।	मनोवृत्ति में वास्तविक तथ्य अधिक होती है जबकि विश्वास में वास्तविकता के अलावा काल्पनिकता की भी संभावना होती है।
3.	मनोवृत्ति दिशात्मक (Directional) होती है। यह प्रायः सकारात्मक या नकारात्मक होती है।	परंतु विश्वास में ये गुण नहीं होते हैं।
4.	मनोवृत्ति में भाव पक्ष एवं प्रेरणात्मक गुण होने के कारण विशिष्ट क्रियाओं में तत्परता होती है।	भाव पक्ष एवं प्रेरणात्मक गुण के अभाव के कारण क्रिया करने की तत्परता या बाध्यता नहीं होती है।

मनोवत्ति एवं अन्य सम्बद्ध प्रत्यय (Attitude and Other Related Concept)

अभिवृत्ति एवं रूचि दोनों का संबंध मानवीय व्यक्तित्व से है। दोनों ही जन्मजात न होकर अर्जित प्रक्रियाएं है, परंतु इनकी प्रकृति एवं व्यवहार में अंतर है।

क्र.सं.	मनोवृत्ति (Attitude)	रूचि (Interest)
1.	अभिवृत्ति में किसी वस्तु विचार या व्यक्ति के संबंध में अनुकूल या प्रतिकूल विचार रख सकते हैं तथा सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों दिशाओं में बढ़ सकते हैं।	रूचि में किसी व्यक्ति विचार या वस्तु के संदर्भ में विशेष लगाव के कारण एक ही दिशा की ओर बढ़ते हैं, उसके प्रति सकारात्मक विचार रखते है तथा उसे पसंद करते हैं। स्पष्ट है कि रूचि हमेशा सकारात्मक होती है, नकारात्मक नहीं।
2.	अभिवृत्ति का क्षेत्र रूचि की अपेक्षा अधिक व्यापक होता है। अभिवृत्ति का प्रयोग सामाजिक, राजनीतिक आदि क्षेत्रों में दिखाई देता है।	रूचि में व्यक्ति की कार्यवाही उसी तक सीमित होती है जिसमें उसकी रूचि होती है। इसमें किसी कार्य-विशेष को अन्यों पर वरीयता देते हैं।
3.	अभिवृत्ति दिन-प्रतिदिन के व्यवहार में अभिव्यक्त होती है।	रूचि का प्रयोग अधिकांशतः व्यावसायिक एवं शैक्षणिक क्षेत्र आदि में होता है (एक-दो क्षेत्रों में रूचि)।
4.	अभिवृत्ति में रूचि की तुलना में प्रेरणात्मक बल (Motivational force) अधिक होता है। यह तुलनात्मक रूप से अधिक टिकाऊ (Stable) होती है।	अभिरूचियों में परिवर्तन उतना कठिन नहीं होता। यदि उपाय प्रतिस्थापन (Substitute) मिलता है, तो फिर व्यक्ति की अभिरूचि में अचानक परिवर्तन भी हो सकता है।

क्र.सं.	मनोवृत्ति (Attitude)	अभिक्षमता (Aptitude)
1.	इसका संबंध संपूर्ण व्यक्तित्व से होता है। (व्यापक आयाम)	यह व्यक्ति की कुछ विशेष कार्य क्षमताओं एवं योग्यताओं को दर्शाता है। (सीमित कार्य क्षेत्र)
2.	अभिवृत्ति व्यक्तित्व की उस विशेषता को इंगित करता है, जिसके द्वारा व्यक्ति किसी वस्तु, व्यक्ति या परिस्थिति के बारे में अपनी सोच एवं विश्वास, पसंद एवं नापसंद के आधार पर व्यवहार करता है।	अभिक्षमता का तात्पर्य उन वर्तमान योग्यताओं एवं क्षमताओं से है, जिसके आधार पर भविष्य में समुचित वातावरण एवं सही प्रशिक्षण प्रदान करने पर साकारित होने की भविष्यवाणी की जा सकती है।

3.	अभिवृत्ति का प्रयोग व्यापक रूप से किसी भी वस्तु, व्यक्ति, विचार, परिस्थिति के प्रति, भावना या प्रतिक्रिया जानने के लिए किया जाता है।	अभिक्षमता का क्षेत्र सीमित है। यह कुछ विशेष क्षेत्रों में व्यक्ति की कौशल क्षमता से संबंधित है।
4.	अभिवृत्ति सदैव अर्जित होती है।	अभिक्षमता जन्मजात और अर्जित दोनों प्रकार की हो सकती है।

क्र.सं.	मनोवृत्ति (Attitude)	मत (Opinion)
1.	मनोवृत्ति प्रत्याशी प्रतिक्रिया (Anticipatory response) है।	मत शाब्दिक अभिव्यक्ति (Verbalized expression) है।
2.	व्यक्ति के व्यवहार पर मनोवृत्ति का प्रभाव अधिक।	व्यवहार पर मनोवृत्ति की अपेक्षा मत का प्रभाव कम।
3.	मनोवृत्ति में संज्ञानात्मक तत्व के साथ भावात्मक और क्रियात्मक तत्व भी होते हैं।	मत एक ऐसा अस्थायी विश्वास है जिसमें परिमार्जन की संभावना होती है। इस रूप में मत में संज्ञानात्मक पक्ष प्रमुख होता है। यहां संवेगात्मक या भावात्मक पक्ष नहीं होता है।
4.	व्यक्ति की मनोवृत्ति को जानकर उसके व्यवहार के बारे में अनुमान लगाया जा सकता है।	व्यक्ति के मत को जानकर उसके व्यवहार का अनुमान लगाना कठिन है।

क्र.सं.	मनोवृत्ति (Attitude)	पूर्वाग्रह (Prejudice)
1.	मनोवृत्ति व्यक्ति विशेष से संबंधित है।	पूर्वाग्रह एक समूह का दूसरे समूह के प्रति स्थिति को दर्शाता है।
2.	मनोवृत्ति नकारात्मक एवं सकारात्मक हो सकती है।	पूर्वाग्रह में नकारात्मक तत्व एवं प्रतिक्रियात्मक पक्ष प्रधान होता है।
3.	संज्ञानात्मक पक्ष के निर्माण में तथ्यों एवं साक्ष्यों की भूमिका।	संवेगात्मक तत्व जैसे- घृणा, वैमनस्य आदि प्रबल होते हैं।

पूर्वाग्रह (Prejudice) :

व्यक्ति एवं समूह के सामाजिक जीवन एवं व्यवहार के निर्धारण में पूर्वाग्रह की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। पूर्वाग्रह एक ऐसी अभिवृत्ति है जो व्यक्ति को अन्य व्यक्ति या समूह के प्रति एक निश्चित ढंग से प्रतिक्रिया करने के लिए तत्पर करती है जिसमें पक्षपात, गलत सूचना, अनम्यता, संवेगात्मकता एवं आक्रमकता की भूमिका होती है।

सामाजिक जीवन में प्राय: देखा जाता है कि लोग पूर्णरूप से जानकारी प्राप्त किये बिना ही एक-दूसरे के बारे में उसकी समूह सदस्यता, जाति, धर्म, भाषा, नागरिकता, रहन-सहन, रूप एवं आकार या उसकी सामाजिक स्थिति के आधार पर उनके प्रति प्रतिकूल धारणा या विचार बना लेते हैं और उनके प्रति कुछ विशिष्ट प्रतिकूल व्यवहार भी करते हैं। यहाँ यह जानने का प्रयास यह नहीं किया जाता है कि उस व्यक्ति या संबंधित समूह में वास्तव में वे दोष या कमियाँ हैं या नहीं ऐसी स्थिति में पूर्वाग्रह आधार विहीन, तर्क विहीन, न्याय विहीन एवं मानवता विहीन होता है। जैसे- प्रजातीय पूर्वाग्रह, यौन पूर्वाग्रह, शारीरिक संरचना पूर्वाग्रह, भाषा और धर्म संबंधित पूर्वाग्रह, आर्थिक और राजनीतिक पूर्वाग्रह आदि।

पूर्वाग्रह की विशेषताएँ :

1. तार्किकता, न्याय एवं मानवता का अभाव
2. दोषपूर्ण एवं दृढ़ सामान्यीकरण
3. भेदभावपूर्ण व्यवहार
4. संवेगात्मक पक्ष की प्रबलता
5. जन्मजात न होकर अर्जित
6. दूसरे समूह के संदर्भ में प्रतिकूल भावना

पूर्वाग्रह का परिणाम :

1. लोगों में परस्पर अविश्वास, द्वेष एवं शत्रुता का भाव विकसित होता है।
2. सामाजिक तनाव, जातीय भेद-भाव सांप्रदायिक दंगों आदि को बढ़ावा मिलता है।
3. समाज का विभिन्न खण्डों में विभाजन
4. समाज में शांति, सद्भाव एवं सहिष्णुता की स्थापना में कठिनाई होती है।

5. देश की एकता और अखण्डता की स्थापना में अवरोध।

6. लोकतंत्र का स्वतंत्र विकास अवरूद्ध हो जाता है।

पूर्वाग्रह को दूर करने के उपाय :

1. पूर्वाग्रह ग्रसित समूहों के मध्य अंत:क्रिया और अंत:आश्रित व्यवहार को बढ़ावा ताकि दोनों समूहों को परस्पर सहयोग आवश्यक हो जाय।

2. सूचना एवं ज्ञान

3. प्रचार

4. जागरूकता

5. कानूनी उपाय

अभिवृत्ति निर्माण या विकास तथा परिवर्तन संबंधी कारक
(Factors influencing the formation or development and change of attitudes)

अभिवृत्तियाँ जन्मजात नहीं होती बल्कि इसका उम्र और **अनुभव के साथ-साथ धीरे-धीरे विकास होता है।** मनोवृत्ति एक अर्जित प्रवृत्ति है। जब हम विभिन्न समयों एवं स्थानों में अन्य लोगों, विषयों एवं वस्तुओं के साथ अन्त:क्रिया करते है तो उन विभिन्न विषयों, वस्तुओं एवं व्यक्तियों के प्रति अभिवृत्तियों का भी निर्माण करते है। चूँकि सीखने *(Learning)* की प्रक्रियाएँ एवं दशाएँ भिन्न-भिन्न हो सकती हैं, इसीलिये अलग-अलग लोगों में नाना प्रकार की अभिवृतियाँ उत्पन्न होती हैं। अभिवृत्ति निर्माण एवं विकास की प्रक्रिया में निम्न महत्वपूर्ण पक्ष या कारक *(Factors)* हो सकते हैं।

1. **साहचर्य (Association) के द्वारा अभिवृत्तियों का अधिगम *(Learning)*/घर, परिवार और सामाजिक वातावरण:** अभिवृत्तियों को सीखने एवं उनके निर्माण में ***माता-पिता** एवं **परिवार के अन्य सदस्य*** तथा ***विद्यालय का परिवेश** एवं **पाठ्य पुस्तकें*** महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। व्यक्ति जिस परिवेश में और जिन लोगों के साथ रहता है उसका उसके अभिवृत्ति निर्माण पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। बालक में अनुकरण की प्रवृत्ति बहुत अधिक पायी जाती है। इसी आधार पर वह अपने माता-पिता या परिवार के किसी सदस्य से स्वयं को सम्बद्ध कर उनकी अभिवृत्ति को ग्रहण करने लगता है। परिवार के सदस्यों के द्वारा किसी के पक्ष या विपक्ष में कही गई बातों के अनुसार भी बालक संबंधित व्यक्ति, समूह, वस्तु आदि के बारे में अनुकूल या प्रतिकूल मनोवृत्ति विकसित कर लेता है। परिवार का स्वस्थ वातावरण तथा परिवार के सदस्यों की वांछित अभिवृत्तियाँ बच्चे पर अनुकूल प्रभाव डालते हैं और उसमें उचित अभिवृत्तियाँ जागृत करने में मदद करते हैं।

   विद्यालय में उसकी अभिवृत्तियों के निर्माण या विकास पर अध्यापकों तथा साथी विद्यार्थियों के व्यवहार, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों और स्कूल की अन्य सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ (जैसे-खेलकूद, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि) का गहरा प्रभाव पड़ता है। विद्यार्थी का किसी विषय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति उस विषय के अध्यापक के सकारात्मक साहचर्य से सीखकर होता है।

2. **पुरस्कृत (Reward) या दंडित (Punishment) होने के कारण अभिवृत्तियों को सीखना:** व्यक्तियों द्वारा किये जाने वाले व्यवहार के बदले में प्राप्त दंड या पुरस्कार की अवधारणा भी व्यक्तियों में विशेष प्रकार की अभिवृत्ति के विकास में योगदान देती है, जैसे- यदि विद्यालय में किसी छात्र को साहसिक या वीरतापूर्ण कार्य के पुरस्कारस्वरूप 'बाल वीरता पुरस्कार' दिया जाता है तो फिर उसमें भविष्य में भी वैसा कार्य करने की मनोवृत्ति विकसित हो जाती है।

3. **प्रतिरूपण (Observation) (दूसरों के प्रेक्षण के द्वारा अभिवृत्ति को सीखना) :** दूसरों को देखकर उनके अनुकरण के माध्यम से भी अभिवृत्ति का विकास होता है। जैसे माता-पिता द्वारा बड़ों के प्रति आदर और सम्मान प्रकट करने के व्यवहार को देखकर बच्चा भी बड़ों के प्रति एक सम्मानपूर्ण अभिवृत्ति विकसित कर लेता है। बड़े या अनुभवी व्यक्ति या अपने रोल मॉडल के व्यवहार, रहन-सहन (घड़ी, कपड़ा, मोबाइल आदि), खानपान इत्यादि की नकल करते हुए व्यक्ति अपने जीवन में विशेष अभिवृत्ति विकसित करता है। जैसे पार्क में टहलने समय किसी अनुभवी व्यक्ति के कार्यप्रणाली को देखकर उसका अनुसरण करने का प्रयास करना।

4. **समूह-जुड़ाव (Group affiliation):** व्यक्ति की मनोवृत्ति निर्माण एवं विकास में समूह-जुड़ाव का प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति किसी खास समूह जैसे-

प्राथमिक समूह (Primary group) : जिसके सदस्यों में घनिष्ठ पारस्परिक संबंध (Interpersonal relationship) हो, 'मैं' की जगह 'हम का भाव (We-feeling)' अधिक, जैसे- परिवार, खिलाड़ियों का समूह आदि।

संदर्भ-समूह (Refrence-group) : वैसा समूह जिसके साथ व्यक्ति आत्मीकरण (Identification) करता है, स्वयं को जोड़ता है वह संदर्भ समूह के लक्ष्यों, मूल्यों, मानदंडों (Norms), विश्वासों एवं तौर-तरीकों के अनुरूप ही मनोवृत्ति विकसित करता है। जैसे- राजनीतिक अभिवृत्ति के निर्माण में प्राथमिक समूह के साथ संदर्भ-समूह की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्राथमिक समूह के प्रभाव के कारण ही समूह के सदस्यों की मनोवृत्ति में एकरूपता पायी जाती है।

5. **सांस्कृतिक मानक (Cultural factors):** प्रत्येक संस्कृति की अपनी परंपरा, धर्म, भाषा, मानदंड, मूल्य एवं विश्वास आदि होते हैं, उनके अनुकूल व्यवहार करना व्यक्ति का कर्तव्य माना जाता है। विशिष्ट परिस्थितियों में उनके पालन की अपेक्षा सभी से की जाती है। यही कारण है कि एक संस्कृति के लोगों की मनोवृत्ति में समानता का तत्व अधिक पाया जाता है। (जैसे- ***खाप पंचायतें*** जिन्हें कानूनी दर्जा प्राप्त नहीं परंतु उन्हें सामाजिक दर्जा प्राप्त है। ये अवसर विशेष पर यह निर्धारित करने का प्रयास करती है कि कौन से कर्मों को समाज में नहीं किया जाना चाहिए।)

6. **सूचना एवं प्रचार के साधनों का प्रभाव:** वर्तमान समय में संचार माध्यमों यथा समाचर पत्र एवं पत्रिकाएं, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, इंटरनेट, सोशल मीडिया (फेसबुक, ट्वीटर) आदि का प्रभाव अभिवृत्तियों के निर्माण एवं परिवर्तन पर पड़ा है। संचार माध्यमों के द्वारा प्रदत्त सूचनाओं के आधार पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही प्रकार की अभिवृत्तियों का निर्माण होता है। पहले यह हमारे ज्ञानात्मक एवं भावनात्मक पक्ष को प्रभावित करता है और तत्पश्चात् व्यवहार में इसकी अभिव्यक्ति होने लगती है। ये अभिवृत्ति पर अच्छा या बुरा दोनों प्रभाव डाल सकते हैं। संचार माध्यमों का उपयोग सकारात्मक अभिवृत्तियों जैसे सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने, वोट डालने, ऑनर किलिंग रोकने, भ्रूण हत्या को रोकने, अंधविश्वासों का निराकरण करने, स्वास्थ्य एवं सामाजिक-राजनीतिक जागरूकता पैदा करने में किया जा सकता है। अफवाहों को रोकने या फैलाने तथा उपभोगतावादी अभिवृत्तियों के निर्माण में भी किया जा सकता है।

7. **आवश्यकता पूर्ति (Want satisfaction):** जिस व्यक्ति, वस्तु, घटना एवं क्रिया से हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति तथा लक्ष्य की सिद्धि होती है, उनके प्रति हमारी मनोवृत्ति अनुकूल होती है तथा इसमें बाधक तत्वों के प्रति हमारी मनोवृत्ति प्रतिकूल हो जाती है।

8. **पुस्तक एवं महान व्यक्तित्व:** अच्छी पुस्तकों एवं महान व्यक्तियों की जीवनी और उपदेश पढ़ने से भी जीवन और समाज के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित होती है। अच्छी पुस्तकों के अध्ययन का भी अभिवृत्ति के निर्माण एवं परिवर्तन पर असर पड़ता है जैसे- कार्ल मार्क्स लिखित 'दास कैपिटल' पढ़कर अनेक लोगों की प्रवृत्ति मार्क्सवादी हो गयी। स्वास्थ्य संबंधी पुस्तकों को पढ़ने से खान-पान और जीवनशैली में सुधार संभव है।

9. **व्यक्तित्व कारक (Personality factors):** व्यक्ति के शीलगुणों (Traits) का भी प्रभाव मनोवृत्ति निर्माण पर पड़ता है। जैसे- जो व्यक्ति परिश्रमी, दृढ़ एवं विश्वसनीय होते हैं, उनमें अपने कर्तव्यों के संपादन की प्रवृत्ति प्रबल होती है। खुले मन (Openmindedness) से युक्त व्यक्ति रूढ़िवादी परंपराओं का विरोध करने लगता है।

10. **तात्कालिक अनुभव:** कुछ अकस्मात् घटने वाली घटनाओं तथा तात्कालिक विशेष अनुभवों के द्वारा भी अभिवृत्तियाँ जन्म लेती है या पुरानी अभिवृत्तियों में परिवर्तन आ जाती है। इनमें अपेक्षाकृत अधिक तीव्रता पाई जाती है। जैसे- किसी दुकानदार की हड़ताली विद्यार्थियों द्वारा उसकी दुकान को क्षति पहुंचाने पर विद्यार्थी समाज के प्रति बनी अभिवृत्ति इसका एक उदाहरण है। जैसे- मिस्टर'A' किसी पार्टी के योग्य दावेदार है परंतु मिस्टर 'B' गलत तरीके से उस पार्टी का टिकट हासिल कर ले तो फिर उस पार्टी के प्रति मिस्टर 'A' की अभिवृत्ति में अचानक परिवर्तन हो सकता है।

11. **नई पहल:** दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए 'ज्ञानोदय एक्सप्रेस ट्रेन' की शुरूआत की गई है जिसका मूल उद्देश्य है- 'भारत को देखो और जानो'। ऐसे टूर प्रोग्रामों से छात्रों में देश के विभिन्न भागों और वहां घटित घटनाओं के प्रति नई मनोवृत्ति विकसित होती है तथा सांस्कृतिक एकता का भाव उत्पन्न होता है।

अभिवृत्ति परिवर्तन

चूंकि अभिवृत्ति अर्जित होती है और इसके निर्माण एवं विकास में कई कारकों का प्रत्यक्ष एवं परोक्ष प्रभाव होता है, परिणाम स्वरूप इन कारकों में परिवर्तन होने एवं नवीन कारकों के उपस्थित होने पर मनोवृत्ति में भी परिवर्तन होने लगता है। यह परिवर्तन दिशात्मक या मात्रात्मक या दोनों प्रकार का हो सकता है।

सामान्यत: जिन कारकों से मनोवृत्ति का निर्माण एवं विकास होता है उनमें परिवर्तन आने पर मनोवृत्ति में भी दिशात्मक या मात्रात्मक परिवर्तन होने लगता है।

दिशात्मक परिवर्तन: जब किसी मनोवृत्ति विषय जैसे- देश, व्यक्ति, दल आदि के प्रति व्यक्ति की मनोवृत्ति अनुकूल से प्रतिकूल या प्रतिकूल से अनुकूल हो जाये।

मात्रात्मक परिवर्तन: इसका आशय मनोवृत्ति की अनुकूलता या प्रतिकूलता की मात्रा या पसंद या नापसंद की मात्रा की कमी या अधिकता से है।

सामान्यत: व्यक्ति की मनोवृत्ति में दिशात्मक परिवर्तन की संभावना कम होती है जबकि मात्रा/तीव्रता में परिवर्तन होता रहता है।

मनोवृत्ति परिवर्तन के महत्वपूर्ण कारक :

1. बुद्धि का विकास या नवीन ज्ञान की प्राप्ति
2. समूह के साथ संबंधों में परिवर्तन
3. नवीन उत्पन्न घटनाएँ एवं परिस्थितियाँ जैसे- महंगाई, दुर्घटना, कोरोना महामारी आदि।
4. प्रभावी संवाद (Persuasive Communication)
5. नये कानून, नियम एवं दिशा-निर्देश
6. आर्थिक सुधार एवं विकासात्मक गतिविधियाँ
7. दण्ड, प्रशंसा एवं पुरस्कार
8. सूचना और तकनीक का विकास एवं प्रचार

विभिन्न समस्याओं का समाधान

मनोवृत्ति परिवर्तन के माध्यम से विभिन्न समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। जैसे- लिंग-भेद, जातिभेद, नक्सलवाद, साम्प्रदायिकता, आतंकवाद, पर्यावरण संकट आदि।

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

अभिवृत्ति के प्रकार्य या वृत्ति (The function of Attitude)

अभिवृत्ति के प्रकार्य (Functions of Attitude)

- ज्ञान प्रकार्य (Knowledge Function)
- अनुकूलन प्रकार्य/उपयोगितावादी प्रकार्य (Adaptive Utilitarian Function)
- अहं अभिव्यक्तिपरक प्रकार्य (Ego-expressive Function)
- अहं प्रतिरक्षा प्रकार्य (Ego-defensive Function)

अभिवृत्ति किसी व्यक्ति के चार प्रमुख प्रकार्यों को संपन्न करती है। ये प्रकार्य व्यक्तियों की जरूरतों की रक्षा और उनकी छवि को प्रभावी बनाती है।

डेनियल कॉज (Daniel Katz) तथा स्टॉटलैण्ड ने अभिवृत्त के चार मुख्य प्रकार्य बताये हैं-

1. **साधनात्मक या अनुकूलन वृत्ति/प्रकार्य (Instrumental or adaptive function):** कुछ अभिवृत्तियाँ हमें अप्रिय स्थितियों (Undesirable circumstances) या नापसंद वस्तुओं से दूर करने एवं वांछित लक्ष्य (Desired Goals) या पसंदीदा वस्तुओं को

प्राप्त करने में मदद करती है। इसमें 'अधिकतम सुख एवं कम से कम दुख' के उपयोगितावादी विचार (Utilitarian Concept) का समर्थन होता है। इसके कारण ही हम कुछ वस्तुओं, स्थितियों, व्यक्तियों एवं समूहों के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित कर लेते हैं जहां ***प्रशंसा और पुरस्कार*** की संभावना होती है तथा उन वस्तुओं या व्यक्तियों के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति विकसित कर लेते हैं जहां ***दंड या दुखद अनुभूति*** की स्थिति होती है।

प्रशासनिक संदर्भ में अनुकूलन वृत्ति का प्रयोग प्रशासकों को जनकेन्द्रित कार्यों को संपादन करने पर प्रशंसा, प्रोत्साहन एवं पुरस्कार तथा भ्रष्ट कृत्यों के संबंध में दंड एवं हतोत्साहन के द्वारा किया जाता है। जैसे अभी हाल में ही छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित जिले दन्तेवाड़ा में उत्कृष्ट कार्य संपादन के लिए जिलाधिकारी ओम प्रकाश चौधरी को शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने पर व्यक्तिगत श्रेणी में 'प्रधानमंत्री एक्सेलेन्सी अॅवार्ड' से नवाजा गया है।

2. **ज्ञान वृत्ति या ज्ञान प्रकार्य (The Knowledge Function):** लोगों को विश्व के बारे में व्यवस्थित, अर्थपूर्ण एवं संगत दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। इसमें ज्ञानात्मक वृत्ति की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसमें लोग विभिन्न माध्यमों से सूचनाओं का ग्रहण करते हैं तथा घटनाओं के कारण एवं परिस्थितियों को समझने में सक्षम हो जाते हैं। यही ज्ञानवृत्ति हमें पूर्वानुमान लगाने या 'क्या होने वाला है' की भविष्यवाणी करने में समर्थ बनाता है। किसी व्यक्ति की अभिवृत्ति को जानना हमें उसके व्यवहार के बारे में भविष्यवाणी करने में मदद करता है।

   जैसे- बड़ी कम्पनियाँ लोगों के धारणा विचार एवं विश्वास को जानकर उनके अनुरूप कदम उठाती है।

   स्टेरियोटाईपिंग भी अभिवृत्ति के ज्ञानात्मक प्रकार्य का एक उदाहरण है। स्टेरियोटाईपिंग मानसिक संरचना है जिसमें हम किसी वर्ग या समूह के बारे में कुछ सामान्य लक्षणों या विचारों को अपना लेते हैं और यह मानने लगते हैं कि उस वर्ग के सभी सदस्यों में यह लक्षण होगा। (किसी वस्तु, व्यक्ति, या समूह के बारे में एक सामान्य अवधारणा या मत बना लेते हैं। इसी आधार पर वर्ग विशेष के व्यक्तियों की विशेषताओं के बारे में भविष्यवाणी या पूर्वानुमान करते हैं। यह सांस्कृतिक होता है, अपने अनुभव से नहीं होता है।) यहां व्यक्ति के व्यक्तिगत गुण को नहीं देखते बल्कि समूह या वर्ग के आधार पर उस व्यक्ति का मूल्यांकन करते हैं। जैसे- 'औरतें अच्छी ड्राइवर नहीं होती' या महिलाएँ गणित में कमजोर होती हैं या किसी विशेष जाति के बारे में कुछ पूर्वाग्रह (Prejudice)। पूर्वाग्रह किसी व्यक्ति विशेष के लिए न होकर वर्ग विशेष के लिए होता है। जैसे- महिलाओं का वर्ग, यहूदियों के बारे में आदि।

3. **मूल्य अभिव्यक्ति प्रकार्य (वृत्ति) (The Value-expression function):** मूल्य अभिव्यक्त अभिवृत्ति व्यक्ति को उसके द्वारा स्वीकार्य प्रधान मूल्यों एवं आत्म सम्प्रत्यय (Central values and self-concept) को अभिव्यक्त करने में मदद करती है। यह अभिवृत्ति यह दर्शाती है कि 'हम कौन है?' और 'हम किस चीज को प्राप्त करना चाहते हैं।' एक व्यक्ति अपने गुणों और व्यवहारों के संबंध में जो मत रखता है वहीं उसका आत्म प्रत्यय है। *यह आत्म प्रत्यय व्यक्ति के व्यवहारों, योग्यताओं और गुणों के संबंध में उसकी अभिवृत्ति, निर्णय एवं मूल्यों का योग है।*

4. **अहं रक्षार्थ वृत्ति (The ego-defense function):** कुछ अभिवृत्तियाँ हमें हमारे अहं या आत्मसम्मान को मनोवैज्ञानिक रूप से कमजोर करने वाली घटनाओं, व्यवहार एवं सूचनाओं से रक्षा करती है। इसके लिए व्यक्ति कई मनोवैज्ञानिक तकनीकों का उपयोग करता है। जैसे कभी कोई अधिकारी गलत निर्णय लेता है तो वह आत्मसम्मान के रक्षार्थ उस निर्णय का बचाव करते हुए ऐसा कह सकता है कि उस परिस्थिति में वही निर्णय सही था या उसका निर्णय दूसरे अधिकारी द्वारा दिये गये सलाह का परिणाम है। संक्षेप में-

   1. अपनी कमियों और गलतियों को दूसरों के ऊपर डाल देना। (Projection/प्रक्षेपण)।
   2. या अपनी असफलता से निपटने के लिए कोई सामाजिक कारण ढूढ़ लेना। (Rationalization/औचित्य बताना) आदि।

   जब मनोवृत्ति सामाजिक मूल्यों एवं मानकों के अनुरूप हो तो फिर जीवन में उसके अनुरूप व्यवहार करने के लिए व्यक्ति तत्पर रहता है। इससे परस्पर संगठित होकर समाज में मूल्यों की स्थापना में मदद मिलती है। पुनः जब मनोवृत्ति वर्तमान मूल्यों एवं मान्यताओं के विपरीत होती है तो फिर यह सामाजिक परिवर्तन को भी बढ़ावा देती है। इस रूप में यह रूढ़िवादिताओं एवं अंधविश्वासों को भी दूर करने का कार्य करती है।

जब प्रशासनिक अधिकारियों की मनोवृत्ति सिविल सेवा मूल्यों के अनुरूप हो तो फिर वे अपने अधिकारों का सदुपयोग एवं कर्त्तव्यों का समुचित रूप से पालन करते हैं।

कुशल एवं प्रभावी प्रशासन एवं प्रबंधन हेतु अभिवृत्ति के उपरोक्त कार्यों का समुचित, सकारात्मक उपयोग किया जा सकता है।

उदाहरण:

जैसे कोई 'X' धार्मिक व्यक्ति जिसको अपने धर्म से बहुत लगाव है वह दूसरे धर्मावलंबियों के प्रति नकारात्मक प्रवृत्ति विकसित कर सकता है। कल्पना करें कि वह 'X' व्यक्ति अपने समान विचार वाले लोगों के समूह के साथ है।

'X' कहता है कि निःसन्देह हमारा धर्म सबसे अच्छा है। अन्य धर्मों में कुछ अच्छाईयाँ हैं परंतु वह हमारे धर्म की तुलना में कहीं नहीं ठहरता है। अन्य लोग उसका समर्थन एवं प्रशंसा करते हैं। तब उस 'X' अनुकूलन वृत्ति प्रबल होती है। उस समूह के सभी लोग उस धर्म विशेष से संबंधित धार्मिक प्रतीकों धारण करते हैं, टी-शर्ट या विशेष वेशभूषा धारण करते हैं। यही मूल्य अभिव्यक्ति वृत्ति या आत्म अभिव्यक्ति व्यवहार (Self expression function) है।

विचार और आचरण के संबंध में अभिवृत्ति का प्रभाव एवं संबंध
(Influence and relation of attitude with thought and behaviour)

विचार मनोवृत्ति के संज्ञानात्मक घटक से संबंधित अवयव है जबकि व्यवहार व्यक्ति के क्रियात्मक घटक से संबंधित है। अभिवृत्ति विचार एवं व्यवहार के अतिरिक्त भावात्मक पक्ष से भी युक्त होती है।

सामान्यतः हमारे व्यवहार हमारी अभिवृत्तियों के अनुसार होते हैं/या अभिवृत्तियाँ हमारे व्यवहार को संचालित करती हैं। परंतु अभिवृत्ति व्यक्ति के व्यवहार का एकमात्र निर्धारक नहीं है। कभी-कभी ऐसे अवसर एवं परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं कि अभिवृत्ति एवं कार्य व्यवहार में अंतर आ जाता है। हम अभिवृत्ति के विपरीत व्यवहार करने लगते हैं। हमारे विचार, व्यवहार का अभिवृत्ति से कैसा संबंध है, इसे लेकर नाना प्रकार के मत है।

'हम जो हैं' (आंतरिक रूप से) तथा ***'हम जो करते हैं'*** (बाह्य रूप में) इनमें क्या संबंध है, इसके संबंध में दो मुख्य प्रश्न उभरते हैं।

1. *क्या अभिवृत्ति व्यवहार को निर्धारित करती है।* (Do attitudes determine behaviour?) यह निर्धारण किस सीमा तक और किन परिस्थितियों में होता है।
2. अभिवृत्ति के आधार पर किसी के व्यवहार की भविष्यवाणी कब की जा सकती है?

अभिवृत्ति और व्यवहार

व्यवहार का अभिवृत्ति से अनिवार्य, निरपेक्ष एवं सीधा संबंध न होकर सापेक्ष संबंध है। अभिवृत्ति के अनुरूप या विपरीत व्यवहार कुछ आंतरिक दशाओं और वाह्य स्थितियों पर निर्भर करता है। आंतरिक दशाओं के अंतर्गत-

1. व्यक्तियों के संज्ञानात्मक तत्व अर्थात् उनके विचार, मूल्यों में विश्वास, व्यक्तित्व के शीलगुण आदि आते हैं।
2. भावात्मक पक्ष अर्थात् कार्यों के संबंध में पसंद या नापसंद का भाव एवं उनकी मात्रा का तत्व सम्मिलित होता है।

ज्ञान के अनुरूप हमारे मन में पसंद या नापसंद का भाव हो तथा उसके अनुरूप क्रिया हो, यह आवश्यक नहीं है। जैसे किसी व्यक्ति को यह जानकारी हो कि सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। वह इसे नापसंद भी करता है फिर भी हो सकता है कि जीवन में इसका प्रयोग करता हो।

अभिवृत्ति के प्रतिकूल व्यवहार निम्नलिखित स्थितियों में संभव है-

1. **सामाजिक दबाव/बाह्य प्रभाव:** जैसे सामाजिक दबाव के कारण अपनी जाति और धर्म से भिन्न, अपनी पसंद के व्यक्ति से विवाह न पाना। जैसे खाप पंचायतों की स्थिति।
2. **व्यक्तिगत स्वार्थ, लाभ या आवश्यकता पूर्ति की संभावना** जैसे- कई राजनेताओं द्वारा आरंभ के चार वर्षों में शिथिल रहने के बाद चुनावी वर्ष में सक्रियता दिखाते हुए जनहित के कार्य करवाना ताकि पुनः चुनाव को जीता जा सके। चुनाव के समय

जनता से हाथ जोड़कर वोट के लिए निवेदन करना।

3. **कानूनी बाध्यता से (Code of Conduct):**
    1. सरकार द्वारा लॉकडाउन की घोषणा के बाद घूमने के लिए नहीं निकलना।
    2. जैसे कूड़ेदान का प्रयोग क्योंकि यदि सार्वजनिक स्थल पर कूड़ा फेंका गया तो जुर्माना लगेगा।
    3. तेज गाड़ी चलाना एवं तेज आवाज से संगीत सुनना।
    4. कोड-ऑफ-कंडक्ट के अनुसार आचरण करना।

4. **आवश्यकता या जरूरत से :**
    - जैसे- अपने मित्र को बीमारी के समय खून देना।
    - राजनेताओं द्वारा चुनाव के समय जनता से हाथ जोड़कर वोट के लिए निवेदन करना।
    - साक्षात्कार के दौरान टाई पहनना।

4. **सामर्थ्य के अभाव में**
    - जैसे- बच्चा गहरे पानी में डूब रहा हो, वहाँ आप उपस्थित हैं परंतु तैराकी का अनुभव न होने पर चाहकर भी उसे न बचा पाना।

5. **विकल्पों के अभाव में**
    - जैसे- विवशतावश सामने आये आतंकी को घात लगाकर मार देना।

6. ज्यादा लाभ या व्यापक क्षति होने की स्थिति में भी लोग व्यवहार पर ध्यान देने लगते हैं। उपयुक्त परिणाम निकलने की आस में भी मनोवृत्ति की अभिव्यक्ति व्यवहार होने लगती है।

अभिवृत्ति और व्यवहार में संगति : निम्नलिखित परिस्थितियों में अभिवृत्ति के अनुकूल व्यवहार होने की संभावना प्रबल रहती है।

1. ***अभिवृत्ति का महत्व:*** अभिवृत्ति के तंत्र में जब कोई अभिवृत्ति प्रबल या केन्द्रीय (Central) हो तो फिर उसके अनुरूप जीवन में आचरण होता है। *(जब अभिवृत्ति में ज्ञानात्मक एवं भावनात्मक पक्ष प्रबल हो)*
2. ***व्यवहार के प्रति अनुरूपता:*** जब व्यक्ति की अभिवृत्ति दृढ़ होती है तथा वह उसके प्रति जागरूक होता है तो उस अभिवृत्ति के अनुरूप व्यवहार अपने आप होने लगता है। *(जब व्यक्ति अपने अभिवृत्ति के प्रति जागरूक हो तथा उसकी गहनता अधिक हो।)*
3. ***पहुँच योग्यता:*** जब व्यक्ति को व्यवहार के अनुरूप सकारात्मक परिणाम प्राप्त होते हैं या अवसर मिलते हैं तो फिर वह उस व्यवहार को कार्यान्वित करने में संलग्न हो जाता है। जैसे कोई व्यक्ति पहली बार सुबह टहलने के लिये जाता है और इससे उसके भीतर शारीरिक एवं मानसिक संतुष्टि होती है तो फिर वह सुबह टहलने के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित कर लेता है। *(व्यक्ति की जिस अभिवृत्ति से पुरस्कार की अपेक्षा अधिक और दंड नगण्य हो।)*
4. ***प्रत्यक्ष अनुभव:*** किसी व्यक्ति का प्रत्यक्ष अनुभव भी व्यवहार के लिए प्रेरित करता है।

अभिवृत्ति का व्यवहार पर सकारात्मक एवं नकारात्मक असर दोनों प्रभाव पड़ता है। यदि प्रवृत्ति सकारात्मक हो तो फिर व्यवहार सकारात्मक होता है और यदि प्रवृत्ति नकारात्मक हो तो फिर उसकी अभिव्यक्ति नकारात्मक व्यवहार के रूप में उभरती है।

किसी विशेष कार्य को संपन्न करना बौद्धिक प्रक्रिया का परिणाम है। इस प्रक्रिया के क्रम में हम विभिन्न प्रकार के क्रियाकलापों के बारे में सोचते हैं, उनके परिणामों का मूल्यांकन करते हैं, और फिर यह निर्णय लेते हैं कि उस कर्म को करना है या नहीं करना है। यह निर्णय हमारे व्यवहार में अभिव्यक्त होता हैं। अभिवृत्ति का विचार और व्यवहार के साथ क्या संबंध है? इस संबंध में दो मुख्य अवधारणाएँ उभरती हैं-

अभिवृत्ति विचार से संचालित होती है एवं व्यवहार को नियंत्रित करती है। जब अभिवृत्ति अपने अनुरूप व्यवहार में व्यक्त नहीं होती तो फिर वहाँ विसंगति उत्पन्न होती है।

नैतिक अभिवृत्ति (Moral Attitude)

नैतिक अभिवृत्ति नैतिक मूल्यों, नैतिक निर्णयों, नैतिक सिद्धांतों आदि के संबंध में व्यक्ति के ज्ञानात्मक, भावनात्मक एवं क्रियात्मक घटक को इंगित करती है। नैतिक अभिवृत्ति वह है जो किसी विचार, व्यवहार या व्यक्ति का गुणात्मक मूल्यांकन (Qualitative Evalution) करती हैं। यहां उनके संबंध में अच्छे या बुरे, पसंद या नापसंद का भाव प्रकट किया जाता है। नैतिक अभिवृत्ति का संबंध 'चाहिए' से होता है। जैसे- हम एक व्यक्ति के ईमानदार आचरण की प्रशंसा इस आधार पर करते हैं कि- 'ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है।'

एक व्यक्ति को सदैव ईमानदार रहना चाहिए क्योंकि ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है। विभिन्न दल सत्ता में आने के बाद अपने पार्टी के अनुरूप अधिकारियों की पोस्टिंग विभिन्न पदों पर करने की सिफारिश करते हैं। इन सबसे लोकसेवकों की निष्पक्षता प्रभावित होती है। सुप्रीम कोर्ट ने प्रशासकों की निष्पक्षता को सुनिश्चित करने के लिए अभी हाल में ही यह तय किया है कि कम से कम 6 वर्षों तक प्रशासनिक अधिकारियों का तबादला सरकार नहीं कर सकती।

ईमानदार एवं कर्तव्यनिष्ठ अधिकारियों का सबसे अधिक बार तबादला होता है तो ऐसा कर उन्हें पार्टी-विशेष के अनुरूप काम करने के लिए विवश किया जाता है।

प्रशासनिक दायित्वों एवं कर्तव्यों के संपादन के क्रम में अंतर्रात्मा की आवाज की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विशेष रूप में ऐसी परिस्थिति में जहां कार्य करने की प्रक्रिया एवं निर्णय स्वविवेक पर आधारित हो जैसे आपदा प्रबंधन, आपात सहायता आदि के संबंध में। ऐसी स्थिति में अधिकारी को प्रक्रिया की बजाय परिणाम को ध्यान में रखकर तत्काल कदम उठाने की आवश्यकता होती है। ऐसी स्थिति में इसे अपनी अंतर्रात्मा की आवाज को सुनना चाहिए। गांधी ने भी इसका समर्थन किया है।

नैतिक अभिवृत्ति के निर्माण के कारक :

1. परिवार
2. सामाजीकरण
3. विद्यालय का परिवेश
4. अध्यापक एवं पुस्तकें
5. समाज सेवा के लिए प्रतिबंध संगठन एवं समूह
6. मीडिया
7. सिविल सोसाईटी
8. व्यक्तिगत अनुभव
9. महान लोगों की जीवन गाथा
10. दंड एवं पुरस्कार
11. कोड ऑफ कंडक्ट एवं कोड ऑफ इथिक्स
12. अंतर्रात्मा की आवाज

राजनीतिक अभिवृत्ति (Political attitude)

क्या है?

राजनीतिक अभिवृत्ति का संबंध सार्वजनिक जीवन के विभिन्न पक्षों से है। राजनीतिक अभिवृत्ति **शासन के स्वरूप** (राजतंत्र, धर्मतंत्र, लोकतंत्र आदि) **राजनीतिक विचारधाराओं** (अराजकतावाद, मार्क्सवाद, समाजवाद आदि) राज्य के उद्देश्य एवं कार्य यथा व्यक्तिवाद, समाजवाद आदि, राजनीतिक दलों, नेताओं, उनके कार्यक्रमों, नीतियों, **राजनीतिक सोच** यथा उदारवाद, राजनीतिक रूढ़िवाद (Conservatism), प्रतिक्रियावाद, राष्ट्रवाद, चुनाव प्रणाली, भागीदारी, मतदान व्यवहार, NOTA आदि के संबंध में नागरिकों की विचार प्रक्रिया, औचित्य-अनौचित्य की चेतना, पसंद-नापसंद का भाव एवं ***व्यावहारिक क्रियाकलापों*** (मतदान करना, हड़ताल करना, रैली निकालना, सत्याग्रह करना आदि) को इंगित करती है। व्यक्ति का राजनीतिक जीवन एवं क्रियाकलाप सामान्यत: उसकी राजनीतिक अभिवृत्ति से संचालित होती है।

राजनीतिक अभिवृत्ति को प्रभावित करने वाला कारक

राजनीतिक अभिवृत्ति को प्रभावित करने वाले कारक

- परिवार
- जाति
- धर्म
- संचार माध्यम
- चुनावी मुद्दे एवं नेता का व्यक्तित्व
- शिक्षण संस्थान
- मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति
- नये कानून

1. **समूह-लगाव (Group affiliation):** व्यक्ति की मनोवृत्ति निर्माण एवं विकास में समूह-जुड़ाव का प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति किसी खास समूह जैसे-

   प्राथमिक समूह (Primary group) : *जिसके सदस्यों में घनिष्ठ पारस्परिक संबंध हो, 'मैं' की जगह 'हम का भाव (We-feeling)' अधिक, जैसे- परिवार आदि।*

   संदर्भ-समूह (Refrence-group) : *वैसा समूह जिसके साथ व्यक्ति आत्मीकरण (Identification) करता है, जोड़ता है।* संदर्भ समूह के लक्ष्यों, मूल्यों, मानदंडों (Norms), विश्वासों एवं तौर-तरीकों के अनुरूप ही मनोवृत्ति विकसित करता है। जैसे- राजनीतिक अभिवृत्ति के निर्माण में प्राथमिक समूह के साथ संदर्भ-समूह की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्राथमिक समूह के प्रभाव के कारण ही समूह के सदस्यों की मनोवृत्ति में एकरूपता पायी जाती है। परिवार में माता-पिता और अन्य संबंधी जिन राजनीतिक प्रक्रियाओं एवं मान्यताओं में विश्वास करते हैं, उसका प्रभाव सामान्यतः उनके बच्चों पर भी जाता है। उदाहरणस्वरूप- अमेरिका में बुश परिवार पीढ़ियों से डेमोक्रेटिक पक्ष का समर्थन करता रहा है। (पारिवारिक पृष्ठभूमि का प्रभाव)

2. **आर्थिक दबावः** राजनीतिक अभिवृत्ति के निर्धारण का एक महत्वपूर्ण कारक आर्थिक दबाव है। जब किसी देश की आर्थिक व्यवस्था बिगड़ती है जैसे- प्रति व्यक्ति आय में गिरावट, जीडीपी एवं ग्रोथ रेट में गिरावट एवं लोगों पर अतिरिक्त-कर का भार बढ़ता है, तो सत्ताधारी दल के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति प्रबल होती है, परिणामस्वरूप राजनीतिक बदलाव भी आता है। साइप्रस आदि में आर्थिक संकट के कारण राजनीतिक संकट उत्पन्न हुआ, प्याज मूल्य में वृद्धि के कारण सरकार संकट में।

3. **समाज एवं शिक्षण संस्थानः** राजनीतिक अभिवृत्ति पर जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र आदि का भी प्रभाव होता है।

4. **धार्मिक संदर्भः** विभिन्न पार्टियाँ यद्यपि स्वयं को धर्मनिरपेक्ष होने का दावा करती हैं परंतु चुनाव-टिकट वितरण के क्रम में धार्मिक संदर्भ को ध्यान में रखा जाता है। विभिन्न धार्मिक समूह अपने हितों को ध्यान में रखकर चुनाव प्रक्रिया में शामिल होते हैं।

5. **चुनावी मुद्देः** अमेरिका में राष्ट्रपति चुनाव के दौरान उम्मीदवारों द्वारा वाद विवाद

मीडिया, सिविल सोसायटी, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियाँ, नेता का व्यक्तित्व, मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति, क्षेत्रवाद, भाषावाद, आरक्षण, भ्रष्टाचार, हित समूह एवं दबाव समूह आदि भी राजनीतिक अभिवृत्ति को प्रभावित करते है।

भारत में लोगों की राजनीतिक अभिवृत्ति में पिछले एक दशक में सकारात्मक परिवर्तन आया है। यह उसके लक्षण दिखाई देने लगे हैं। अब व्यक्ति या जाति केन्द्रित न होकर विकास केन्द्रित राजनीति पर बल दिया जा रहा है। सामाजिक एवं राजनीतिक जागरूकता के कारण लोगों की सरकार से अपेक्षायें बढ़ गयी है। इसलिए प्रत्येक सरकार यह दिखाने का प्रयास कर रही है कि वह आम आदमी के निकट है, उनकी समस्याओं से उनका सरोकार है। जैसे- मनरेगा, भूमि अधिग्रहण बिल, लोगों से पूछकर प्रतिनिधियों के चयन की बात, लोगों की सहमति से पार्टी के मेनिफेस्टो का निर्माण आदि।

लोगों के राजनीतिक दृष्टिकोण को बदलने के लिए विभिन्न राजनीतिक दल Persuation skill की मदद लेते हैं। भाषणों, चर्चाओं, गोष्ठियों, संवादों, नारों, विज्ञापनों आदि के माध्यम से अपनी नीतियों, कार्यक्रमों एवं उपलब्धियों को बताकर तथा अन्य दलों की आलोचना कर लोगों की अभिवृत्ति को परिवर्तित एवं प्रभावित करने का प्रयास करते हैं।

राजनीतिक संस्कृति

राजनीतिक संस्कृति का अर्थ है- किसी समाज की संस्कृति के वे पक्ष जो उसकी राजनीति को प्रभावित करते हैं। राजनीतिक संस्कृति में मुख्यतः उस राष्ट्र के ऐसे मूल्यों, विश्वासों एवं मानकों को सम्मिलित किया जाता है। जो शासक वर्ग, शासन प्रणाली और शासन प्रक्रिया को वैधता प्रदान करते हैं और इसके संदर्भ में व्यक्ति की स्थिति को निर्धारित करती है। यह संकल्पना राजनीति को संस्कृति के दृष्टिकोण से देखती है। संस्कृति को राजनीति के दृष्टिकोण से नहीं देखती है।

अभिवृत्ति का सामाजिक प्रभाव (Social Influence of Attitude)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसके कार्य, व्यवहार, निर्णय एवं विश्वास सामाजिक प्रभावों से निर्धारित एवं नियंत्रित होते है। सामाजिक अंत: क्रिया (Social Interaction) के माध्यम से व्यक्ति दूसरे लोगों, संगठनों, समूह दबावों आदि से प्रभावित होता है।

सामाजिक प्रभाव वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा लक्षित व्यक्ति या व्यक्ति समूह की मनोवृत्ति एवं व्यवहार को अन्य व्यक्ति, व्यक्ति समूह या समाज के द्वारा वांछित दिशा में परिवर्तित किया जाता है। जैसे व्यक्तियों पर पारिवारिक सदस्यों, शिक्षकों, मित्रों, सहकर्मियों, सामाजिक संगठनों एवं मीडिया के प्रभाव से उत्पन्न परिवर्तन। सामाजिक प्रभाव सकारात्मक या नकारात्मक, स्थायी या अस्थायी दोनों हो सकता है।

सामाजिक प्रभाव हमारे जीवन का एक अंग है। हम कभी-कभी सामाजिक वातावरण से प्रभावित होते हैं तो कभी स्वयं के विचार एवं प्रभावों से अन्यों को प्रभावित कर देते हैं।

सामाजिक प्रभाव के प्रकार (Types of Social Influence)

सामाजिक प्रभाव के प्रकार (Types of Social Influence)

- अनुपालन (Compliance)
- आत्मसातीकरण (Internalization)
- अनुरूपता (Conformity)
- प्रतिरोधिता (Reactance)
- आज्ञाकारिता (Obedience)

1. **अनुपालन (Compliance) :** अनुपालन का आशय वैसी स्थिति से है जब कोई व्यक्ति अन्यों द्वारा दिये गये सुझाव या अनुरोध के अनुरूप, उनके प्रभाव में आकर उनके अनुरूप व्यवहार करता है।

   अनुपालन की अनेक प्रविधियाँ हैं जिसकी सहायता से लक्षित व्यक्ति से अनुरोध, निवेदन या माँगों का अनुपालन कराया जाता है। अनुरोध के अनुरूप दूसरों से कार्य करवाने के लिए व्यक्ति विभिन्न प्रकार के अनुपालन विधियों का प्रयोग करता है। जैसे-

   (i) *अंगूली पकड़कर हाथ पकड़ना (Foot-in-the-door-technique)* : इसमें पहले छोटा अनुरोध किया जाता है और जब व्यक्ति इसका अनुपालन कर देता है तो फिर उससे बड़े अनुरोधों का अनुपालन करने के लिए कहा जाता है।

   (ii) *बड़ी माँग बताकर छोटी माँग पूरी करना (Door-in-the-face-technique)* : इसमें व्यक्ति लक्षित व्यक्ति के सामने एक बड़ा अनुरोध या माँग रखता है जिसे लक्षित व्यक्ति पूरा नहीं करता। इसके बाद वह व्यक्ति छोटा एवं वास्तविक अनुरोध करता है, ताकि लक्षित व्यक्ति उस अनुरोध का अनुपालन आसानी से कर दे।

   (iii) *छल-कपट की प्रविधि (The-low-balling or throwing-the-technique)* : इसमें अनुरोध या माँग के संबंध में अपूर्ण सूचना देकर उसे आकर्षक रूप में प्रस्तुत किया जाता है। जब लक्षित व्यक्ति उस अनुरोध को स्वीकार कर अनुपालन के/ लिए प्रतिबद्ध हो जाता है तो फिर उसे पूर्ण सूचना देकर उसका अनुपालन कराया जाता है।

2. **आत्मसातीकरण (Internalization) :** जब कोई व्यक्ति किसी अन्य प्रभावशाली व्यक्ति या संगठन के प्रभाव में आकर अपना परंपरागत व्यवहार, दृष्टिकोण एवं मनोवृत्ति को बदलकर, उस विशिष्ट व्यक्ति या संगठन के मूल्यों, जीवनशैली एवं विचारशैली से पूर्णत: सहमत हो, अपने निजी और सार्वजनिक व्यवहार में उसे अपनाता है तो उसे आत्मसातीकरण कहते हैं। यह व्यक्तित्व में परिवर्तन को दर्शाता है।

   उदाहरणस्वरूप :

   - रामकृष्ण परमहंस के संपर्क में आने के बाद नरेन्द्रनाथ द्वारा उनके विचारों को आत्मसात् करना।
   - गांधी के शिष्य विनोबा भावे द्वारा गांधी की नीतियों का अनुशरण करना।

3. **अनुरूपता (Conformity):** सामाजिक प्रभाव का एक प्रचलित प्रकार अनुरूपता है। *अनुरूपता का आशय किसी व्यक्ति द्वारा अपने व्यवहार या विश्वास को समूह के व्यवहार या विश्वास के अनुरूप परिवर्तित कर लेने से है।* इसमें व्यक्ति समाज, संगठन

अथवा अपने संदर्भ समूह के दवाब में आकर उनके निर्णयों, मानकों एवं आदर्शों के अनुरूप व्यवहार करता है/या अपने व्यवहार को समूह के मानकों के अनुसार ढालता है।

व्यक्ति को ऐसा लगता है कि यदि उसने समूह के विपरीत कार्य किया तो *और लोग क्या सोचेंगे, और लोग क्या कहेंगे।* अत: असहजता, उपेक्षा, एकाकीपन या सामाजिक बहिष्कार के भय से बचने के लिए वह उनके अनुरूप व्यवहार करने लगता है। जैसे अपने मित्रों या समूहों के सदस्यों के प्रभाव में आकर उनके अनुरूप व्यवहार अपनाना। सामाजिक लक्ष्यों की प्राप्ति में अनुरूपता सहायक है।

अनुरूपता को प्रभावित करने वाले कारक :

(i) समूह का आकार

(ii) सूमह के सदस्यों में शक्ति, प्रतिष्ठा और प्राधिकार का अंतर

(iii) समूह के सदस्यों का स्वरूप

(iv) प्रेरणा आदि

समाज एवं प्रशासन में अनुरूपता का लाभ :

(i) सामाजिक संगठनों के निर्माण में सहायक।

(ii) संगठनात्मक लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक।

(iii) सामाजिक मानकों के निर्माण में अनुरूपता सहायक है।

(iv) परिस्थितियों की मांग के अनुसार परस्पर सहयोग करते हुए कार्य करने में सहायक।

(iv) सामाजिक समरसता का बढ़ावा देने में मददगार है।

4. **आज्ञाकारिता (Obedience):** आज्ञापालन सामाजिक प्रभाव का सबसे प्रत्यक्ष एवं स्पष्ट रूप है। इसमें व्यक्ति प्राधिकार युक्त व्यक्तियों के प्रभाव में आकार उनके निर्देशानुसार, आज्ञानुसार व्यवहार करता है। आदेश के उल्लंघन की स्थिति में दंड भी मिल सकता है। इसमें भय का तत्व होता है। जैसे स्कूल, संगठन या प्रशासनिक संदर्भ में आज्ञाकारिता का भाव प्रकट करता है।

प्रशासन में आदेशपालन का लाभ

1. प्रशासन में अनुशासन को बढ़ावा देता है।
2. निर्णय लेने में आसानी होती है।
3. विशेष रूप से अधीनस्थ अधिकारियों में कर्तव्यनिष्ठा, सत्यनिष्ठा, ईमानदारी आधारित व्यवहार करने हेतु प्रेरित करता है।
4. विकट परिस्थितियों में एकजुट होकर कठिनाई या चुनौतियों का सामना करने में।
5. भीड़ प्रबंधन में।
6. कानून और व्यवस्था को बनाये रखने में।
7. यह कर्मचारियों पर नियोक्ता या स्वामी के प्रभाव को सुनिश्चित करता है।

प्रशासनिक संदर्भ में सामाजिक प्रभाव की प्रासंगिकता

सुशासन के संदर्भ में प्रासंगिकता: विश्व बैंक एवं संयुक्त राज्य संघ जैसी अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं ने जिस सुशासन (उत्तरदायी, पारदर्शी, सहभागितापूर्ण, जनकेन्द्रित, अनुक्रियाशील प्रशासन) की संकल्पना को 21वीं सदी में सरकारों का मुख्य उद्देश्य घोषित किया है उसकी प्राप्ति में सामाजिक प्रभाव के तकनीक का उपयोग किया जा सकता है।

जब जिले का प्रशासक बेहतर कार्य करता है तो लोग उसके कार्यों एवं आचरण से प्रभावित होते हैं। ऐसा प्रशासक जब किसी स्कूल समारोह में पुरस्कार वितरण हेतु आमंत्रित करता है तो उसके संबोधन का व्यापक प्रभाव छात्रों पर पड़ता है। बच्चे उस व्यक्ति के अनुरूप ही जीवन का लक्ष्य एवं कार्य प्रणाली निर्धारित करने लगते हैं।

धारण (Persuasion): समझाना-बुझाना, मनाना, राजी करना आदि

दैनिक जीवन में हमें व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं प्रशासनिक संदर्भों में —

क्या है: धारण का आशय एक ऐसी प्रक्रिया (Process) से है जिसमें दूसरों के विचारों, भावनाओं, अभिवृत्तियों, एवं कार्यप्रणाली को सुतर्कों (Good Reasoning) एवं संदेशों (Messages) आदि के माध्यम से परिवर्तित कर उन्हें कुछ विशेष मूल्यों, विश्वासों एवं अभिवृत्ति को स्वीकारने (धारण करने) या कुछ करने या न करने के लिए राजी किया जाता है। धारण मनोवृत्ति परिवर्तन का एक प्रमुख कारक है।

इसके द्वारा लोगों की नकारात्मक प्रवृत्ति को बदला जा सकता है।

कैसे समझाना: 1. संदेशों के माध्यम से 2. सुतर्कों के माध्यम से

समझाने के उपाय: 1. समाचार-पत्र, रेडियो, टी.वी., विज्ञापन, अपील, संदेश, वैध तर्क, अच्छा तर्क आदि।

करते क्या हैं: दण्ड का भय, खुशहाली का सपना दिखाना, जागरूकता पैदा करना। जैसे-इनकम टैक्स एवं सर्विस टैक्स डिपार्टमेंट द्वारा लोगों को समयानुसार, पारदर्शितापूर्ण तरीके से अपना कर जमा करने के लिए भय एवं भावी खुशहाली आधारित विज्ञापन प्रकाशित किये जाते है। ताकि लोगों के कर चोरी की अभिवृत्ति रूके और वे देश के विकास में भागीदार बनें। विभिन्न दल अपनी उपलब्धियों का विज्ञापन छपवाकर जनमानस को अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास करते हैं।

क्यों समझाना: 1. अभिवृत्ति में सकारात्मक परिवर्तन लाना। 2. सकारात्मक अभिवृत्ति का प्रसार करना।

धारण (Pursuation) के महत्वपूर्ण तत्व:

1. पर्याप्त सूचना, सुग्राह्यता, आकर्षक, भावनात्मक अपील, संदेश, लक्षित वर्ग (Targeted class)के अनुरूप हो। जैसे-ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों में बाल-विवाह को रोकने हेतु वहाँ की भाषा, बोली या सांस्कृतिक संदर्भों के अनुकूल माध्यम का प्रयोग प्रभावपूर्ण होता है। जैसे- **पोलियो निराकरण** हेतु भारत में सार्वजनिक अभियान चलाये गये। लोगों को इसके फायदे सरलतम तरीके से बताये गये। परिणामस्वरूप लोगों की व्यापक भागीदारी हुई, लोगों की अभिवृत्ति में सकारात्मक परिवर्तन हुए। परिणामस्वरूप इसके निराकरण में मदद मिली।
2. समझाने वाले व्यक्ति का व्यक्तित्व प्रभावशाली हो, अर्थात् स्रोत विश्वसनीय एवं प्रभावी हो। यही कारण है कि भारत सरकार के कई मंत्रालय संबंधित क्षेत्रों में जागरूकता पैदा करने के लिए ब्रांड एम्बेसडर (Brand Ambassador) के रूप में विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े प्रभावपूर्ण व्यक्तियों की मदद लेते हैं।
3. तार्किक या भावनात्मक या दोनों हो।
    - सुभाष चंद्र बोस- 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा'
    - बाल गंगाधर तिलक- 'स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।'
    - लाल बहादुर शास्त्री- 'जय जवान जय किसान'
    - मोहनदास कर्मचंद गांधी- 'अंग्रेजों भारत छोड़ो'

दो पक्ष:

1. **बाह्य पक्ष:** स्रोत की विश्वसनीयता (Credibility of the source), अच्छा तर्क, माध्यम।
2. **आन्तिरक पक्ष:** 1. रिसीवर व्यक्ति का विश्वास। 2. सहज रूप में विश्वास करने में तत्परता।

समस्याएँ क्या है: अभिवृत्ति परिवर्तन के क्रम में धारण की प्रक्रिया में निम्नलिखित समस्याएँ उभर कर सामने आती है।

1. जब अनुनय (Persuasion) के द्वारा स्थापित परंपरागत विश्वासों एवं मूल्यों के विपरीत कोई तर्क दिया जाता है।
2. जब व्यक्ति को ऐसा प्रतीत होता है कि सामने वाला पक्ष अपने हितों की पूर्ति के लिए अनुनय (Persuasion) का सहारा ले रहा है।

3. जब व्यक्ति को अपनी स्वतंत्रता खो देने का भय बना हो।

प्रशासनिक संदर्भ में अनुनय की उपयोगिता

1. **सरकारी योजनाओं के समयानुकूल, प्रभावपूर्ण कार्यान्वयन हेतु जनजागरूकता एवं जनसहभागिता आवश्यक है।** इसके लिए आवश्यक है कि समाज और प्रशासन के मध्य संवादहीनता खत्म हो। प्रशासन के प्रति लोगों में भय या संदेश की गुंजाइश न रहे। समाज और प्रशासन के बीच सकारात्मक संवाद सुनिश्चित करने में तथा लोगों को विकास प्रक्रिया और विकास की नीतियों को जोड़ने में अनुनय की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। गंगा एक्शन प्लान की असफलता में जनभागी का अभाव रहा है।
2. वर्तमान में **आंतरिक सुरक्षा** के लिए बड़ी चुनौती के रूप में नक्सलवाद का उभार हुआ है। नक्सलवाद से निपटने के लिए अन्य तैयारियों के साथ-साथ अनुनय का भी प्रभावशाली तरीके से उपयोग कर उनके सरकार एवं लोकतंत्र विरोधी विचार को बदला जा सकता है तथा विकासात्मक कार्यों में उन्हें भागीदारी बनाकर देश की मुख्यधारा से उन्हें जोड़ा जा सकता है।
3. **पर्यावरण संरक्षण** हेतु कानूनी प्रक्रियाओं के साथ-साथ अनुनय का उपयोग कर उन्हें संवेगात्मक रूप से जागृत कर उनके व्यवहार में परिवर्तन किया जा सकता है। बिजली, पानी आदि की व्यर्थ बर्बादी, कचरे का उचित निस्तारण, वृक्षारोपण अभियान, पोलिथीन के स्थान पर जूट से बने थैलों का प्रयोग आदि के संबंध में अनुनय का प्रयोग कर लोगों की अभिवृत्ति का सकारात्मक दिशा में परिवर्तन किया जा सकता है। संसाधनों के अंधाधुंध दोहन को रोकने के लिए हम यह तर्क दे सकते हैं कि जिस तरह से हमें जीने का अधिकार है उसी प्रकार से हमारी भावी पीढ़ी भी जीने की हकदार है। अत: भावी पीढ़ी के समुचित जीवन यापन की संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए हमारा यह कर्तव्य बनता है कि हम संसाधनों का समुचित दोहन करें।
4. **आर्थिक संदर्भ** में यह प्राय: देखा जाता है कि लोगों में कर चोरी एवं भ्रष्ट आचरण माध्यम से अतिरिक्त धन का संचय करने की प्रवृत्ति पायी जाती है। इसका सीधा दुष्प्रभाव राष्ट्र के विकास एवं जनहितकारी कार्यक्रमों पर पड़ता है। अत: यहां कानूनी प्रक्रियाओं के अतिरिक्त अनुनय की प्रक्रिया का प्रयोग कर उनकी मनोवृत्ति में सकारात्मक परिवर्तन किया जा सकता है।
5. **सामाजिक कुरीतियों** यथा बाल विवाह, दहेज प्रथा, स्त्री शिक्षा, भ्रूण हत्या आदि के संबंध में जनमानस में विद्यमान नकारात्मक प्रवृत्ति को दूर करने में कानूनी पहल के साथ-साथ अनुनयात्मक शैली महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। लोगों को विभिन्न उपायों के माध्यम से यह समझाया जा सकता है कि वे महिलाओं के प्रति सकारात्मक रवैया अपनाये, उन्हें भोग की वस्तु के रूप में व्यवहार न करे। यहां भ्रूण हत्या के दुष्परिणाम एवं इसे नैतिक अपराध-बोध के रूप में चित्रित कर लोगों की भावना एवं सोच में परिवर्तन लाया जा सकता है। पुन: यहां इन्द्रा नूयी, कल्पना चावला, साइना नेहवाल, चंदा कोचर, शोभना भारतीया आदि के बारे में बताकर यह भावना प्रबल की जा सकती है कि बेटियां भी परिवार के लिए नाम, यश और उपलब्धि अर्जित कर परिवार का नाम रोशन कर सकती है।
6. **तीव्र जनसंख्या** प्रसार को रोकने के लिए भी अनुनय का प्रभावशाली प्रयोग किया जा सकता है। बच्चों की बेतहर शिक्षा, स्वास्थ्य एवं भविष्य के बारे में बताकर उन्हें इस संबंध में जागृत किया जा सकता है।

इस प्रकार व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के साथ आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं पर्यावरण के संबंध में व्यक्ति की अभिवृत्ति में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है, एक बेहतर कार्य संस्कृति का निर्माण किया जा सकता है और संविधान की प्रस्तावना में वर्णित मूल्यों एवं आदर्शों को साकारित करते हुए सुशासन की ओर कदम बढ़ाया जा सकता है।

अन्य पक्ष

1. सिगरेट पीने, गुटका खाने आदि के दुष्परिणामों को सिनेमा हॉल में प्रदर्शन करना।
2. वोट देने के लिए प्रसिद्ध लोगों के द्वारा आह्वान करना।
3. बाघों के संरक्षण एवं गंगा की सफाई हेतु जनजागृत्ति अभियान।

अभिवृत्ति की प्रशासन एवं कुशल संचालन में उपयोगिता

अभिवृत्ति व्यक्ति के विचार, विश्वास, मूल्य एवं उपलब्धि से संबंधित है। अभिवृत्ति सफलता की ऊंचाईयों को तय करती है और जीवन में सुख, संतुष्टि और उपलब्धि प्राप्त करने में सहायता करती है। यह प्रशासन में निम्न रूपों में सहायता करती है।

1. सकारात्मक अभिवृत्ति व्यक्ति को आशावादी बनाता है। आशावादी व्यक्तियों में साहस, जोखिम उठाने की संभावना अधिक होती है। ये लोग जीवन के सकारात्मक पक्ष पर अधिक ध्यान देते है। इसलिए यह प्रशासन एवं मानव प्रबंधन महत्वपूर्ण माना जाता है।
2. अभिवृत्ति सामाजिक मूल्यों के दर्शन का माध्यम है, कुशल प्रशासन प्रबंधन और संचालन के लिए सामाजिक मूल्यों का निर्वाह आवश्यक है जो व्यवहार के विभिन्न पक्षों में प्रकट होती है। उदाहरण- ईमानदारी, निष्ठा, शिष्टाचार, कर्तव्य पालन, आदर प्रतिबद्धता या उपलब्धि।
3. सकारात्मक अभिवृत्ति परिस्थितियों या विपरीत परिस्थितियों को अवसर के रूप में लेता है और उसे सफल बनाने के लिए चुनौती लेता है। इसलिए प्रशासनिक अधिकारी के लिए लोक सेवक के लिए सकारात्मक अभिवृत्ति होना चाहिए क्योंकि वह कठिन एवं विपरीत परिस्थितियों को उचित और सुनियोजित चुनौती लेता है और उसकी उपलब्धि उच्चतम होती है।
4. सकारात्मक अभिवृत्ति में कार्य संतुष्टि एवं कार्य प्रतिबद्धता सम्मिलित है। इसलिए जो व्यक्ति अपने कार्य से संतुष्ट है और अपने कार्य से प्रतिबद्ध है तो उस व्यक्ति की उपलब्धि सर्वश्रेष्ठ होगी और कार्य करने की निपुणता आयेगी इस प्रकार संतुष्टि एवं प्रतिबद्धता कार्य को नियमित एवं निपुण बनाती है।
5. सकारात्मक अभिवृत्ति अधिकारों के सदुपयोग एवं कर्त्तव्यों के पालन तथा उत्तरदायित्व वहन करने के भाव को बढ़ाती है।
6. सकारात्मक अभिवृत्ति सामाजिक समायोजन की क्षमता विकसित करती है। सद्‌भावना एवं सहानुभूति जैसी व्यक्तिगत विशेषताओं को विकसित करती है जो कुशल प्रशासन एवं संचालन के लिए महत्वपूर्ण कारक है।

जैसे–

1. आपदा क्षेत्रों में राहत और प्रबंधन कार्य के सुचारू रूप से संचालन के लिए लोगों से यह अनुरोध किया जाता है कि वे क्रम से, पंक्तिबद्ध होकर आएँ, ताकि राहत सामग्री का वितरण ठीक तरीके से हो पाये।
2. किसी गाड़ी के दुर्घटना होने के उपरांत सड़क जाम से छुटकारा पाने के लिए यातायात पुलिस लोगों से यह अनुरोध करती है कि वह गलत दिशा में गाड़ी न ले जाये ताकि जल्द से जल्द जाम से छुटकारा पाया जा सके।

अनुनयात्मक या विश्वासोत्पादक संचार (Persuasive Communication)

सामाजिक प्रभाव का एक महत्वपूर्ण प्रकार्य या उद्देश्य दूसरे व्यक्तियों की अभिवृत्तियों में परिवर्तन लाना है। मनोवृत्ति परिवर्तन के अनेक कारक हैं जिसमें विश्वासोत्पादक संचार की भूमिका महत्वपूर्ण है। संचार की इस प्रक्रिया में एक स्रोत के माध्यम से सूचना या संदेश प्रेषित किया जाता है जो एक लक्षित व्यक्ति या समूह तक पहुँचता है। संचार की इस प्रक्रिया का प्रभाव लक्षित व्यक्ति या समूह पर कितना पड़ेगा, यह अनेक कारको पर निर्भर करता है।

अनुनयात्मक संचार लक्षित व्यक्ति की सूचनाओं (विचार, विश्वास, संज्ञान) के क्षेत्र में नियंत्रण हेतु एक सुनियोजित हस्तक्षेप है। व्यक्ति अपनी सूचनाओं एवं विचारों के अनुरूप व्यवहार करता है।

विश्वासोत्पादक संचार द्वारा मनोवृत्ति में होने वाला परिवर्तन मूलतः चार करणों पर निर्भर करता है-

1. संचारण का स्रोत : विश्वसनीय संचारक, विशेषज्ञ
2. संचारण का विषय एवं विशेषता : आकर्षक, स्थिति में सुधार, भय पैदा करना, डर उत्पन्न करने की सूचना
3. संचारण का माध्यम : सरल, सुग्राह्य, प्रभावी
4. श्रोतागण या लक्षित व्यक्ति या वर्ग की विशेषता : उदार, अनुदार आदि।